Padma Vibhushan

SHRI M. T. VASUDEVAN NAIR (POSTHUMOUS)

Shri M. T. Vasudevan Nair, affectionately known M.T., was a cultural icon whose work has profoundly influenced several generations of readers, and continues to do so. He was a writer, film director, scenarist, editor and orator whose contributions to Malayalam language, literature and cinema, remain unparalleled.

2. Born on 15th July, 1933, in a small village called Kudallur, in Palakkad district, he was passionate about reading and writing from an early age. He graduated from Government Victoria College, Palakkad. In 1954 he made his presence known in the world of literature by winning the first prize in the World Short Story competition for Best Short Story in Malayalam. The competition was organized by the New York Herald Tribune. After graduation, he worked as a teacher in M B Tutorial College, Palakkad until he joined the premium Malayalam publication, 'Mathrubhumi', as a sub editor in 1957.

3. Shri Nair published his first novel "Nalukettu" in 1958, which won the Kerala Sahitya Akademi Award. He wrote his first screenplay "Murappennu" in 1965, based on one of his short stories. He was appointed Editor of Mathrubhumi weekly in 1968, and during his stint spanning three decades, he was instrumental in discovering and encouraging a generation of new Malayalam writers. His first directorial venture was "Nirmalyam"(1973), considered a classic which bagged several national and international awards including the President's Gold Medal in 1973 for best feature film and the Garuda award in the Jakarta Asian Film Festival.

4. Shri Nair has published more than 200 short stories, 8 novels, several collections of essays, travelogues and a play. He is credited with developing a well-defined structure and format to the screenplay in Malayalam cinema. He has written 55 screenplays for feature films as well as an anthology of short films. He has directed 7 films and most have won state, national and international awards. He was a pioneer in several aspects. He was the first to publish screenplays, adding a literary value to the format, which later became the unofficial guidebook for several screen writers. As the editor of the Mathrubhumi literary magazine, he facilitated translation of several books, from other Indian languages as well as English, into Malayalam, thereby introducing Malayalee readers to world literature. He was a visionary who understood the need to preserve language and culture. He took up the reins of the Thunchan Memorial, in 1992 and spent three decades of his life to create a befitting memorial to Thunchath Ramanujan Ezhuthachan, who is considered the father of modern Malayalam language. Today it is the most revered memorial dedicated to a language and its founder, in India.

5. Shri Nair had received innumerable awards and titles during his life time. The Central Sahitya Akademi (1970), Jnanpith (1995) Sahitya Akademi Fellowship (2013). He was honoured with Padma Bhushan in 2005. He holds the record for maximum number of National Film Awards for Best Screenplay, which he won four times - (1989, 1991, 1993, 1994) and 17 State Awards. The Vayalar Award (1984), Kerala Sahitya Akademi Fellowship (2005), Ezhuthachan Puraskaram (2011), J C Daniel Award (2013), Kerala Jyothi Puraskaram (2022) are some of the major recognitions.

6. Shri Nair passed away on 25th December, 2024.

श्री एम.टी. वासुदेवन नायर (मरणोपरांत)

श्री एम.टी. वासुदेवन नायर, जिन्हें प्यार से एम.टी. के नाम से जाना जाता है, एक सांस्कृतिक आदर्श थे जिनके काम ने पाठकों की कई पीढ़ियों को गहराई से प्रभावित किया है, और अब भी कर रहा है। वह एक लेखक, फिल्म निर्देशक, पटकथा लेखक, संपादक और वक्ता थे जिनका मलयालम भाषा, साहित्य और सिनेमा में अद्वितीय योगदान है।

2. 15 जुलाई, 1933 को पलक्कड़ जिले के कुडल्लूर नामक एक छोटे से गाँव में जन्मे, उन्हें बचपन से ही पढ़ने–लिखने का शौक था। उन्होंने पलक्कड़ के सरकारी विक्टोरिया कॉलेज से स्नातक किया । 1954 में उन्होंने मलयालम में सर्वश्रेष्ठ लघु कथा के लिए विश्व लघु कथा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीतकर साहित्य की दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रतियोगिता का आयोजन न्यूयॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून ने किया था। स्नातक होने के बाद उन्होंने एमबी ट्यूटोरियल कॉलेज, पलक्कड़ में एक शिक्षक के रूप में काम किया, जिसके बाद 1957 में उन्होंने प्रमुख मलयालम प्रकाशन, मातृभूमि में उप संपादक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

3. श्री नायर का पहला उपन्यास "नालुकेट्टू" 1958 में प्रकाशित हुआ, जिसे केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। उन्होंने 1965 में अपनी पहली पटकथा "मुराप्पेन्नु" लिखी, जो उनकी एक लघु कहानी पर आधारित थी। 1968 में वह मातृभूमि साप्ताहिक के संपादक बने, और तीन दशकों के अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने नए मलयालम लेखकों की एक पीढ़ी को सामने लाने और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके निर्देशन में पहली फिल्म "निर्मल्यम" (1973) थी, जिसे एक क्लासिक माना जाता है। इस फिल्म ने 1973 में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रपति स्वर्ण पदक और जकार्ता एशियाई फिल्म महोत्सव में गरुड़ पुरस्कार सहित कई राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय पुरस्कार जीते।

4. श्री नायर की 200 से ज़्यादा लघु कथाएं, 8 उपन्यास, कई निबंध संग्रह, यात्रा–वृत्तांत और एक नाटक प्रकाशित हुआ है। उन्हें मलयालम सिनेमा में पटकथा में एक स्पष्ट संरचना और प्रारूप विकसित करने का श्रेय जाता है। उन्होंने फीचर फिल्मों के लिए 55 पटकथाएं और साथ ही लघु फिल्मों का एक संकलन भी लिखा है। उन्होंने 7 फिल्मों का निर्देशन किया है जिनमें से ज़्यादातर ने राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। वह कई पहलुओं में अग्रणी थे। वह पटकथा प्रकाशित करने वाले पहले व्यक्ति थे, जिससे इस विधा को एक साहित्यिक रूप मिला, जो बाद में कई पटकथा लेखकों के लिए अनौपचारिक मार्गदर्शिका बन गया। साहित्यिक पत्रिका मातृभूमि के संपादक के रूप में, उन्होंने अंग्रेजी सहित अन्य भारतीय भाषाओं से कई पुस्तकों का मलयालम में अनुवाद किया, जिससे मलयाली पाठक विश्व साहित्य से परिचित हुए। वह एक दूरदर्शी व्यक्ति थे जिन्होंने भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने की आवश्यकता को समझा। उन्होंने 1992 में थुंचन स्मारक की बागडोर संभाली और थुंचन रामानुजन एझुथाचन के लिए एक उपयुक्त स्मारक बनाने के लिए अपने जीवन के तीन दशक लगा दिए। थुंचन को आधुनिक मलयालम भाषा का जनक माना जाता है। आज यह भारत में किसी भी भाषा और उसके संस्थापक को समर्पित सबसे प्रतिष्ठित स्मारक है।

5. श्री नायर को अपने जीवनकाल में अनगिनत पुरस्कार और उपाधियां प्राप्त हुईं जैसे केंद्रीय साहित्य अकादमी (1970), ज्ञानपीठ (1995), साहित्य अकादमी फेलोशिप (2013)। 2005 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उनके नाम सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए सबसे ज़्यादा राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीतने का रिकॉर्ड है, जिसे उन्होंने चार बार जीता – (1989, 1991, 1993, 1994) और साथ ही 17 राज्य पुरस्कार भी जीते। वायलार पुरस्कार (1984), केरल साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप (2005), एजुथाचन पुरस्कारम (2011), जेसी डेनियल पुरस्कार (2013), केरल ज्योति पुरस्कारम (2022) उन्हें मिले कुछ प्रमुख सम्मान हैं।

6. 25 दिसंबर, 2024 को श्री नायर का निधन हो गया।